



ISSN: 3049-2017

IJMH 2026; 3(1): 159-162

© 2026 IJMH

www.themultijournal.com

Received: 16-02-2026

Accepted: 25-02-2026

Publish : 26-02-2026

Shis Mohammed

Researcher,
Department Of Sahitya,
Central Sanskrit University,
New Delhi

आधुनिक संस्कृतकाव्ये वर्णित गङ्गाजल प्रदूषण : एकटि विश्लेषणात्मक अध्ययन

(Pollution of the Ganga in Modern Sanskrit Poetry : An Analytical Study)

Shis Mohammed

DOI <https://doi.org/10.5281/zenodo.19096243>

शोधसार –

गङ्गा नदी भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता एवं जातीय मननेर एकटि प्रतीकस्वरूपा प्राचीन साहित्यिक रचनया गङ्गा पवित्रता, मातृत्व एवं मुक्तिदायिनी रूप सुस्पष्टतावे प्रतिफलित ह्येछे। किन्तु आधुनिक युगे क्रमवर्धमान शिल्पान, नगरायण एवं परिवेशविषयसंज्ञा कर्मकाण्डे फले गङ्गाजल आज चरम दूषणेर शिकार ह्येछे, या भारतीय संस्कृति चेतनार जन्य एक गतीर संकेत निर्देश करे। आधुनिक संस्कृत काव्ये एह संकेतके गतीर संवेदन ओ दायित्वबोधेर सङ्गे चित्रित करा ह्येछे। समसामयिक कविरा ताँदेर काव्यरचनया गङ्गा उपर आरोपित निर्मम दूषण एवं तार सामाजिक, आध्यात्मिक ओ परिवेशगत प्रभावशुलिके साहसिकतार सङ्गे तुले धरेछेन। गङ्गाजले प्लास्टिक, रासायनिक बर्ज्य, मृतदेह ओ अन्यान्य दूषणेर उपस्थिति एवं तार फले जलज प्राणी ओ मानवजीवने विपर्ययेर छवि ताँदेर काव्ये स्पष्टतावे प्रतिफलित ह्येछे। एहिसब काव्य रचनार माध्यमे कविगण केवल प्रतिवादहै जानाननि, वरन् मानुषेर मध्ये परिवेश सचेतनता एवं गङ्गा पुनरुद्धारेर मानविक आह्वान जानियेछेन। एह गवेषणया विभिन्न आधुनिक संस्कृत काव्य विश्लेषणेर माध्यमे ए विषयटि स्पष्ट ह्येछे ये, समसामयिक कविरा गङ्गाजल दूषणके एकटि जातीय गुरुत्वपूर्ण समस्या हिसेबे चिह्नित करे काव्येर माध्यमे समाजके सचेतन करते सक्रिय भूमिका पालन करेछेन। ताँरा काव्यिक अलंकार, प्रतीक एवं रूपकेर माध्यमे गङ्गा पवित्रता ओ संकेतकेर द्वैत वास्तवता तुले धरेछेन, या केवलमात्र धर्मिय चेतनारहै नय, परिवेशगत नैतिकतारओ एक अनन्य प्रकाश।

संकेत शब्द- आधुनिक संस्कृत काव्य, गङ्गाजल दूषण, मानविक चेतना, शिल्पबर्ज्य।

भूमिका-

भारतीय संस्कृतिते गङ्गा शुधुमात्र एकटि सामान्य नदी नय, एटि धार्मिक ओ सांस्कृतिक महत्व आछे। गङ्गा समस्त ब्रह्माण्डेर अधिष्ठात्री, विद्यारूपिनी, करुणामयी, आनन्ददायिनी, कल्याणकारिणी ओ मोक्षप्रदायिनी। ऋषि मुनिदेर मते गङ्गा आराधना थेके मनुष्य सकल प्रकार दुःख थेके मुक्ति लाव करे। गङ्गा तटे स्थित जनपद, पशुपत्ति, स्वर्ण-जम्भ धन्य ओ पवित्र।

धन्या जानपदा ये च पशवः पक्षिकीटकाः

स्थावरा जङ्गमाश्च न्ये गङ्गातीरसमाश्रिताः *1

ये मनुष्य इच्छानुसारे गङ्गा तटे निवास करे ताके सहस्रयुग पर्यन्त तपस्याकारी पुरुषेर थेके श्रेष्ठ मने करा हय। गङ्गा अमृत स्वरूप जल पृथिवीके पवित्र करे चलेछे। गङ्गा महत्व सम्पर्के सकल मानव सुपरिचित तथा तार उपकारिता थेके सबओ लाभाश्रित ह्ये आसछे। गङ्गा संकेत हल सभ्यतार संकेत। मानव जाति सभ्यतार संकेते भुगछे। भोगवादी प्रवणता प्रकृतिर साथे कसाँस तुल्य आचरण करछे। किछु व्याक्ति भारतीय सभ्यतार प्रतीक गङ्गा उपर बाँध निर्माणेर माध्यमे पूँजिवादीदेर आधिपत्य आरओ शक्त करछे। आज पृथिवीते प्रकृति ओ मानवेर दुःख कष्ट दूर करार जन्य ज्ञानेर प्रतीक मानवतावादी, वैज्ञानिक कर्मेर प्रतीक विप्लवी समाजकर्मी ओ भक्तिर प्रतीक करुन हृदय साहित्यकारदेर प्रयोजन। बार्थ ओ प्रयुक्तिगत विप्लवेर एह युगे एमन संवेदनशील विप्लवेर प्रयोजन या आमामे उल्लेख करारते पारे ये गङ्गा आमामे गौरव पूर्ण विषय। भारतेर सौभाग्यवर्धक, गोमूखनिर्गत एवं शोक-संहारक एह गङ्गा जल आज स्पर्शाशेषी मनुष्यारा प्रतिनियत दूषित करे चलेछे।

Correspondence:

Shis Mohammed

Researcher,
Department Of Sahitya,
Central Sanskrit University,
New Delhi

প্রাচীন সাহিত্যের দ্বারা প্রভাবিত আধুনিক কবিগণ গঙ্গাজল প্রদূষণ বিষয়ে আমাদের অবগত করেছেন। হরেকৃষ্ণ শতপথী, নিরঞ্জন মিশ্র, কমলা পাণ্ডে, ইচ্ছারাম দ্বিবেদী প্রমুখ আধুনিক কবিগণ গঙ্গা নদীর দুর্দশা বর্ণনা করেছেন। হরেকৃষ্ণ শতপথীর মতে দেবনদী গঙ্গার জলের দ্বারা কাশীনাগর পবিত্র। গঙ্গা ভারত মাতার হৃদয়কে পবিত্র করেছে। কিন্তু ভারতের প্রাণস্বরূপ গঙ্গাজল আজ পঙ্কলযুক্ত। যে গঙ্গা নদী ভারত মাতার হৃদয়কে পবিত্র করে ভারতের প্রাণস্বরূপ সেই গঙ্গা নদীর জল প্রদূষিত হয়েছে। গঙ্গার জল প্রদূষণের কারণে গঙ্গা তটে স্থিত তীর্থস্থান বিনষ্ট হয়ে পড়েছে। আজ সিদ্ধ যোগীরাও গঙ্গার দূষিত জলে স্নান, আচমান আদি করতে ভয় পাচ্ছে। জল দূষণের জন্য গঙ্গা জলে স্থিত জীবেরাও বিলুপ্ত হয়ে যাচ্ছে। গঙ্গার তটে স্থিত কলকারখানার বর্জ্য পরিস্ফুরন বিনা সরাসরি গঙ্গার জলে মিশেছে। এটি গঙ্গাজল দূষণের মূল কারণ। কানপুরে অবস্থিত চর্ম শিল্প গঙ্গা জলের সর্বাধিক হানি ঘটায়। মনুষ্য দেবনদী গঙ্গার তটে মৃতদেহকে অর্ধজ্বলিত অবস্থায় গঙ্গার জলে প্রবাহিত করে পবিত্র জলকে দূষিত করছে।

“গङ्गा नाम पवित्रमस्ति नितरामुच्चार्यते केवलम्

लोकानां शवमेव सम्प्रति हरिश्चन्द्रादिघाटोच्चये।

मात्रं ह्यर्धमितं विदाह्यं च पुनःनिक्षिप्य तत्तज्जলে

नित्यं मोहवशादुপার্জনপराः स्वार्थं नियुक्ताः डमाः॥” *2

সম্প্রতি প্রকৃতি নিজের পবিত্রতা হ্রাস করে দিয়েছে। শহরায়নের পাশে প্রবাহিত নদী আজ দূষিত হয়ে গিয়েছে। দেবতুল্য গঙ্গা নদী পানের অযোগ্য। হরেকৃষ্ণ শতপথী গঙ্গা দূষণের কারণ স্বরূপ বৈজ্ঞানিক পদ্ধতি, গঙ্গা তটে স্থিত শিল্প ও কারখানা স্থাপনাকে দায়ি করেছেন। সেই কারখানার বর্জ্য গঙ্গার জলে মিশে জলকে দূষিত করছে। তাই শতপথী মহোদয় অত্যন্ত দুঃখের সঙ্গে বলেছেন, বৈজ্ঞানিক প্রগতি দ্বারা লাভ অপেক্ষা ক্ষতি সর্বাধিক হচ্ছে।

विज्ञानस्य परे युगे सुरनदीतीरेऽधुना नूतना

व्यामोहात् किमपि प्रसाधनधिया शिल्पाञ्चलाः निर्मिताः ।

तेभ्यः किन्तु विनिर्गतैश्च मलिनैः वाष्पादिभिर्दूषणै

-र्नष्टं भारतजीवनं भवति चेद् विज्ञानदानेन किम् ?॥*3

ইচ্ছারাম দ্বিবেদী গঙ্গাজলের দুর্দশা দেখে অত্যন্ত দুঃখের সঙ্গে বলেছেন কারখানার মলিন জল গঙ্গায় প্রতিনিয়ত প্রবেশ করে জলদূষণ করছে।

“तीर्थं जातं भृशमशुचि हा श्री हरिद्वारसंज्ञं

मध्येगङ्गां क्षिपति मलिनं यन्त्रं शालायन्त्रं तत्।

रात्र्यावासोऽभवदसुलभो होटलैदीर्घशुल्कै-

र्मद्यं मांसं प्रकटमभितो दृश्यते पण्यवीथ्यम्॥*4

প্রাত্যহিক জীবনে প্লাস্টিকের ব্যবহার দ্রুত বৃদ্ধি পাচ্ছে। গঙ্গার জলে সেইসব প্লাস্টিক মনুষ্যরা নিক্ষেপ করছে। যা শতাব্দীর পর শতাব্দী ধরেও দ্রবীভূত হতে পারে না। ফলে আবর্জনা রূপে তা গঙ্গার জলকে দূষিত করছে।

जीवने गृह्यमाणाऽधुना भूयथाः

प्लास्टिकेति' प्रसिद्धा नवा निर्मितिः।

दूषणोत्पादिका याऽवसाने लयं

नो समीयात् पृथिव्यां शताब्दीमपि ॥*5

বর্তমানে মানব সিঙ্গেটিক পদার্থের দৈনন্দিন জীবনে প্রয়োগ বহুল পরিমাণে করে আঘনাশকে আমন্ত্রণ করছে। সেই ধ্বংসাত্মক রাসায়নিক পদার্থ দ্বারা জলের সজীবতা নষ্ট হচ্ছে। এই বিষাক্ত দুর্গন্ধ যুক্ত পদার্থের কারণে জলে স্থিত অক্সিজেন বিনষ্ট হওয়ায় জলজ প্রাণীর সঙ্গে সঙ্গে মনুষ্যরাও অসুস্থ হচ্ছে। গঙ্গার তীরে বিদ্যুৎ শিল্পের কারখানা এবং ঔষধ নির্মাণের কারখানার বর্জ্য থেকে নির্গত মিথেন গ্যাস অত্যন্ত মারাত্মক দূষক পদার্থ যা জলকে দূষিত করে। যে গঙ্গা আগে পরিপূর্ণ শুদ্ধ জলে বরষার নাথ করে সকলের মনকে হরণ করত সেই গঙ্গায় আজ দূষিত উপনদীর জল মিশে জল কে দূষিত করছে। কমলাপাণ্ডে আরও বলেছেন- গোমুখ থেকে নির্গত, পাপ ও শোকের বিনষ্টকারী, মুক্তি প্রদানকারী, শীতল, স্মৃতিদায়ক গঙ্গার জল আজ স্বার্থান্বেষী মানবরা দূষিত করে দিয়েছে, এ কেমন বিস্ময়? যে নির্মল জলকে সকল প্রাণীরা সর্বদা পান করে, যে জল বিনা জীবন ধারণ অসম্ভব সেই জলই আজ দূষিত হয়ে গিয়েছে। যে জলে আচমন করে গঙ্গার পবিত্র ভক্তগণের স্বর্গলোক প্রাপ্ত হত সেই জল সাবুনের ফেনা, থুতু, প্লাস্টিক মিশ্রিত হয়ে গিয়েছে। পূর্বে সুন্দর প্রপাত ও উপনদীর জল গঙ্গায় মিলিত হতো, হায়! আজ মূত্রবিষ্ঠা, আবর্জনাযুক্ত রোগপ্রদ নালী গঙ্গার জলে মিশে জল দূষিত করছে।

सङ्गता यत्र नद्यः प्रपाताः पुरा

सीकरैः संयुताः स्वच्छतोयाः शुभाः।

मुत्र-विष्ठा-मलानां प्रणाल्यः सदा

सम्मिलन्तीह हा तत्र रोगप्रदाः॥*6

ডাঁ অশোককুমার শুরু বলেছেন গঙ্গার তট এবং গঙ্গার জল উভয়ই দূষক পদার্থের দ্বারা দূষিত এবং পঙ্কযুক্ত হয়ে পড়েছে।

भागीरथ्यास्तं वारि दुष्टद्रव्येणदूषितम्।

मलिनं पङ्कयुक्तं तद् दुर्गन्धं दुर्गतिं गतम्॥*7

যে গঙ্গা সমস্ত জগতকে নিজের নির্মল জল দ্বারা পবিত্র করে সেই গঙ্গা স্বয়ং অত্যন্ত পবিত্র কিন্তু মনুষ্যরা আজ নিজের দুষ্কর্ম দ্বারা এই পবিত্র গঙ্গার জলকে প্রদূষিত করে দিয়েছে।

जगदुद्धारिका गङ्गा विमला विमलोदका।

कृता कलुषीतास्माभिः कालुष्येन कुकर्मणा॥*8

জল প্রদূষণের এর ফলে সংসার চক্রের বিনাশ নিশ্চিত জেনেও যে ব্যক্তি প্রতিদিন জলকে দূষিত করে সেই বাস্তবিক রূপে মুখ। যে গঙ্গা অমৃতরূপ বিষয়ে অজ্ঞাত, যে শুধুমাত্র গঙ্গাকে জলপ্রবাহ মনে করে এমন ব্যক্তিকে ষিঙ্কার।

जानन्ति ये यज्जलदूषणेन

संसारचक्रस्य विनाश एव।

तथापि नित्यं किल दूषयन्त-

स्ते विश्ववन्द्या विपरीतबोधाः॥

ममामृतं पश्यन्ति यो न लोকে

जानाति मां केवलमेव धाराम।

ममावरोधेन निजावरोधं

प्रसारयन्तं खलु धिङ्मनुष्यम्॥*9

গঙ্গা সর্বদা মলকে পরিষ্করণ করে এমন মনে করে যে মনুষ্য নিজের শরীরের মল গঙ্গার জলে বিসর্জিত করে নিজেকে পবিত্র মনে করে সে বস্তুত: ময়লা

নিজের শরীরে ধারণ করে। পৃথিবীর সকল মানুষের মল বহনকারী গঙ্গা এখন মল মূত্রের বাহক হয়ে পড়েছে। নিরঞ্জন মিশ্র আরও বলেছেন আধুনিক শিল্পায়নের দ্রুত বিস্তারের ফলে আজ প্রকৃতি গভীর সংকটে নিপতিত। ভারতীয় সাংস্কৃতিক চেতনায় গঙ্গা কেবলমাত্র একটি নদী নন—তিনি জীবনের ধারক, পবিত্রতার প্রতীক এবং মাতৃসম মর্যাদায় অভিষিক্ত। অথচ আজকের যান্ত্রিক সভ্যতার প্রভাবে সেই গঙ্গায় চরম অবহেলা ও দূষণের শিকার। কলকারখানার বর্জ্যবাহী যানবাহন যখন নির্বিচারে নদীতে প্রবেশ করে, তখন তার বিশুদ্ধতা নষ্ট হয়, পরিবেশের ভারসাম্যও বিপর্যস্ত হয়ে পড়ে। অর্থালোলুপ মানুষের দৃষ্টিতে গঙ্গার পবিত্রতা ও ঐতিহ্য আজ গুরুত্বহীন; তাঁকে আর মায়ের মতো শ্রদ্ধা করা হয় না, বরং এক ব্যবহারযোগ্য সম্পদ হিসেবে বিবেচনা করা হয়। এই মানসিকতা শুধু গঙ্গার মর্যাদাকেই ক্ষুণ্ণ করে না, তা মানবজাতির নৈতিক অবক্ষয় ও পরিবেশবিরোধী মনোভাবকেও স্পষ্ট করে তোলে। নিরঞ্জন মিশ্র আমাদেরকে সতর্ক করে বলেন যে যদি প্রকৃতির প্রতি দায়িত্ববোধ ও শ্রদ্ধা ফিরে না আসে, তবে সভ্যতার স্থায়িত্বও প্রশ্নের মুখে পড়বে। তাই প্রকৃতি ও নদীর সঙ্গে আমাদের সম্পর্ককে নতুন দৃষ্টিতে দেখার প্রয়োজনীয়তা আজ অত্যন্ত আবশ্যিক।

**ঐন্দ্রোগিকানামিহ বাহনানি
প্রবিশ্য গঙ্গামপি দুষ্যন্তি।
মাতা বসুনাং, ধনলোলুপানাং
নিরাবলম্বা তরুণী ব্ৰহ্মবা।***¹⁰

গঙ্গা সকলের জন্য অমৃত প্রদান করে। গঙ্গা কারোর পৈত্রিক সম্পত্তি নয়। যে ব্যক্তি গঙ্গার বিঘ্ন উৎপন্ন করে সে সমগ্র বিশ্বের শত্রু।

**গঙ্গা সমেষামমৃতপ্রদাত্রী
ন পৈতৃকং কস্যচিদস্তি ভূমৌ।
তদ্বিঘ্নমুত্পাদয়িতুং সযত্রা:
সমস্তলোকস্য ন শত্রব: কিম্।***¹¹

ডাঁ কমলা পাণ্ডে গঙ্গার জলের দুর্দশা দেখে অত্যন্ত দুঃক্ষের সঙ্গে বলেছেন- যাদের বুদ্ধি নষ্ট হয়ে গিয়েছে, মন অপবিত্র হয়ে গিয়েছে, চেতনা বিকশিত হয়নি, বিবেক কলুষিত হয়ে গিয়েছে, জ্ঞানী ব্যক্তিদের বৈভব বা জ্ঞানকে অজ্ঞানতা ছিনিয়ে নিয়েছে, তারা সকলে একত্রিত হয়ে যদি এই মহা বিপর্যয়ের জন্ম দেয় তাতে আশ্চর্য হওয়ার কী আছে ?

**বুদ্ধির্নথ্যতি মানসং কলুষতাঃস্ক্রান্তং ন কিং দৃশ্যতে ?
সুমাধীর্নং হি চেতনা মুকুলিতা ভ্রষ্টো বিবেকো ন কিম্ ?।
অজ্ঞানেন বিলুম্বোধবিম্বা ধীরা ন সন্তীহ কিম্ ?
সর্বশ্চৈতদনর্থকং প্রকুরতে যদ্বদ্য কো বিস্ময়: ?।***¹²

গঙ্গাজল দূষণের এই সংকট নিরসনে ভারত সরকার একাধিক জাতীয় নীতিমালা ও প্রকল্প প্রণয়ন করেছে, যা গঙ্গাজলের সংরক্ষণ ও দূষণ নিয়ন্ত্রণে বিশেষভাবে সহায়ক।

১. নামামি গঙ্গে প্রকল্প (Namami Gange Programme)

২০১৪ সালে কেন্দ্র সরকার 'নামামি গঙ্গে' নামক একটি সমন্বিত প্রকল্প চালু করে, যা গঙ্গা ও তার উপনদীগুলির সার্বিক পরিষ্কার, সংরক্ষণ ও পুনর্জীবনের উদ্দেশ্যে গৃহীত হয়। এই প্রকল্পে গৃহস্থালি ও শিল্পবর্জ্য পরিশোধন, নদীতীর

উন্নয়ন, নদীভিত্তিক জীবনধারা সংরক্ষণ এবং জনসচেতনতা বৃদ্ধির উপর বিশেষ গুরুত্ব দেওয়া হয়েছে।

২. গঙ্গা অ্যাকশন প্ল্যান (Ganga Action Plan - GAP)

১৯৮৫ সালে গঙ্গার দূষণ রোধে গৃহীত হয় গঙ্গা অ্যাকশন প্ল্যান, যা ছিল ভারতের নদী সংরক্ষণের প্রথম গুরুত্বপূর্ণ উদ্যোগ। এই প্রকল্পের প্রথম পর্যায়ে বর্জ্য নিষ্কাশন ব্যবস্থা, নর্দমা নিয়ন্ত্রণ ও নদীতীর সংরক্ষণকে প্রাধান্য দেওয়া হয়। GAP-II নামে দ্বিতীয় পর্যায় শুরু হয় ১৯৯১ সালে, যা GAP-I-এর পরিপূরক হিসেবে কাজ করে।

৩. জাতীয় নদী সংরক্ষণ পরিকল্পনা (National River Conservation Plan - NRCP)

গঙ্গা অ্যাকশন প্ল্যানের সম্প্রসারিত রূপ হিসাবে ১৯৯৫ সালে চালু হয় জাতীয় নদী সংরক্ষণ পরিকল্পনা। এই পরিকল্পনার মাধ্যমে গঙ্গা সহ অন্যান্য নদীগুলির দূষণ নিয়ন্ত্রণ ও পরিবেশগত ভারসাম্য রক্ষায় কার্যকর পদক্ষেপ নেওয়া হয়। এতে নর্দমা পরিশোধন প্ল্যান্ট নির্মাণ, জৈব দূষণ নিয়ন্ত্রণ, এবং জনসম্পৃক্ততার উপর বিশেষ জোর দেওয়া হয়।

৪. গঙ্গা নদী অববাহিকা ব্যবস্থাপনা পরিকল্পনা (Ganga River Basin Management Plan - GRBMP)

২০১০ সালে IIT গুলির একটি যৌথ উদ্যোগ হিসেবে গঠিত এই পরিকল্পনা গঙ্গা অববাহিকার সামগ্রিক পরিবেশগত উন্নয়নের রূপরেখা প্রদান করে। এখানে জলসম্পদ ব্যবস্থাপনা, দূষণ প্রতিরোধ, ভূমি ব্যবহার ও নদীতীর পুনরুজ্জীবনের উপর বৈজ্ঞানিক পরামর্শ প্রদান করা হয়েছে। এই পরিকল্পনার তত্ত্বাবধানে গঠিত সুপারিশগুলি কেন্দ্র সরকার নীতিগত সিদ্ধান্ত গ্রহণে ব্যবহার করেছে। এই প্রকল্পসমূহ শুধুমাত্র প্রশাসনিক পদক্ষেপ নয়, বরং এক সাংস্কৃতিক ও নৈতিক দায়িত্বরূপে উদ্ভাসিত হয়েছে। আধুনিক সংস্কৃত কাব্যেও এই প্রকল্পসমূহের সামাজিক প্রভাব ও পরিবেশগত গুরুত্ব প্রতিফলিত হয়েছে। গঙ্গার বিশুদ্ধতা রক্ষার এই প্রচেষ্টা একদিকে যেমন পরিবেশ রক্ষায় ভূমিকা রাখছে, তেমনিই জাতীয় চেতনার সঙ্গে যুক্ত হয়ে ভারতীয় মননে এক নবজাগরণের সৃষ্টি করছে।

উপসংহার-

আধুনিক সংস্কৃত কাব্য আজ সময়ের বাস্তবতা ও সামাজিক দায়বদ্ধতাকে গভীরভাবে ধারণ করেছে। প্রাচীন যুগে ধর্মীয়, নীতিশিক্ষামূলক ও দর্শনভিত্তিক ভাবনাগুলিকে প্রাধান্য দেওয়া হলেও, আধুনিক কাব্যসাহিত্য পরিবেশসংকট, বিশেষ করে গঙ্গার জলদূষণের মতো গুরুত্বপূর্ণ বিষয়ের প্রতি গভীর মনোযোগ দিয়েছে। গঙ্গা জলের অপবিত্রতা ও মানবসৃষ্ট দূষণকে আধুনিক কবিগণ কেবলমাত্র প্রকৃতি বিপর্যয় নয়, ধর্মীয় ও নৈতিক অবক্ষয়ের প্রতিচ্ছবি হিসেবে চিত্রিত করেছেন। এই কাব্যগুলিতে গঙ্গার করুণ আর্তি যেন এক সামাজিক আহ্বান, যা মানুষকে সচেতনতা, দায়িত্ববোধ ও সংস্কারমূলক মনোভাবের দিকে আহ্বান জানায়। আধুনিক কবিরা কেবল দুঃখ ও বেদনাকেই প্রকাশ করেননি, বরং এক নবচেতনার সূচনা ঘটিয়েছেন—যেখানে গঙ্গা পুনরায় তার মহিমা ফিরে পাবে মানুষের সহযোগিতায় ও সদিচ্ছায়া। আধুনিক কাব্যগুলিতে গঙ্গার আর্তনাদ, তার প্রতি মানুষের অবজ্ঞা এবং প্রকৃতির উপর চলমান নিষ্ঠুর আচরণের বিরুদ্ধে এক ধরনের সাহসী কাব্যিক প্রতিবাদ ধ্বনিত হয়েছে। একই সাথে এই কাব্য পরিবেশ রক্ষা ও নৈতিক চেতনা পুনরুদ্ধারের জন্য আমাদের সচেতন করে

তোলে। এভাবেই আধুনিক সংস্কৃত কাব্য পরিবেশবিষয়ক এক শক্তিশালী কণ্ঠস্বর হয়ে উঠেছে, যা শুধু গঙ্গার পবিত্রতা রক্ষার আহ্বান নয়, বরং বৃহত্তর অর্থে মানবিক ও নৈতিক পুনর্জাগরণের বার্তাবাহক। এই সাহিত্যধারা আমাদের মনে করিয়ে দেয়, যখন সমাজ মৌন থাকে, তখন কাব্য কথা বলে।

Endnotes

1. পদ্মপুরাণ- 64/70
2. ভারতায়নম্ অষ্টম সর্গ শ্লোক সংখ্যা - 48
3. ভারতায়নম্ অষ্টম সর্গ শ্লোক সংখ্যা - 26
4. দূতপ্রতিবচনম্- শ্লোক সংখ্যা- 11
5. রক্ষত গঙ্গাম্, দশম সর্গ, শ্লোক সংখ্যা -11
6. রক্ষত গঙ্গাম্, দশম সর্গ, শ্লোক সংখ্যা -9
7. পর্যাবরণকাব্যম্, পঞ্চম অধ্যায়, শ্লোক সংখ্যা -56
8. পর্যাবরণকাব্যম্, পঞ্চম অধ্যায়, শ্লোক সংখ্যা -50
9. গঙ্গাপুত্রাবদানম্, চতুর্দশ সর্গ, শ্লোক সংখ্যা - 17, 41
10. গঙ্গাপুত্রাবদানম্, পঞ্চদশ সর্গ, শ্লোক সংখ্যা – 33
11. গঙ্গাপুত্রাবদানম্, পঞ্চদশ সর্গ, শ্লোক সংখ্যা -35
12. রক্ষত গঙ্গাম্, দশম সর্গ, শ্লোক সংখ্যা – 40

সন্দর্ভ গ্রন্থসূচী

1. ড. মিশ্র, নিরঞ্জন (২০১৩), গঙ্গাপুত্রাবদানম্, হরিদ্বার : প্রকাশন মাতৃসদন
২. শতপথী, হরেকৃষ্ণ, (2008), ভারতায়নম্, তিরুপতি: রাষ্ট্রীয়সংস্কৃতবিদ্যাপীঠম্
৩. শর্মা, বিষ্ণুদত্ত, (1964) গঙ্গাসাগরীয়ম্, অভিনব সাহিত্য প্রকাশন
৪. ড. মিশ্র, কুমার, অশোক (2004) পর্যাবরণকাব্যম্, দিল্লী : পরিমল পাব্লিকেশন্স
৫. ডা. কমলা পাণ্ডে – রক্ষত গঙ্গাম্ (1999) শ্রীমাতা পাব্লিকেশন্স
৬. দ্বিবেন্দী, ইচ্ছারাম, (1989) দূতপ্রতিবচনম্, দিল্লী : দেববাণী পরিষদ
7. শাস্ত্রী, মোতীরাম, (2009) পয়ঃ পানম্, শ্রী নর্মদা কথা ন্যাস পরিষদ
8. দাস, নারায়ণ, (2010) গঙ্গে চ যমুনে চ, উড়িষ্যা : লোকভাষা প্রচার সমিতি